भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1293

उत्तर देने की तारीख 27.07.2026

प्राचीन बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद

1293. श्रीमती महुआ मोइत्रा:

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि चीन और यूरोप के अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित तथा निजी वेबसाइटों पर मूल रूप से संस्कृत में रचित प्राचीन एवं मध्यकालीन बौद्ध ग्रंथों के अंगेजी अनुवाद सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराए जा रहे हैं;

(ख) यदि हाँ, तो क्या ये अनुवाद भारत के संस्कृत विश्वविद्यालयों के सहयोग से किए गए हैं;

(ग) क्या सरकार संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित अन्य भारतीय भाषाओं में प्राचीन एवं मध्यकालीन संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद के प्रकाशन के लिए कोई योजना कार्यान्वित कर रही है; और

(घ) यदि हाँ, तो इस योजना के कार्यान्वयन में शामिल संस्थानों और अब तक हुई प्रगति का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): संस्कृति मंत्रालय को ऐसा कोई संदर्भ प्राप्त नहीं हुआ है और वह ऐसी अनुवाद परियोजनाओं के संबंध में कोई केंद्रीकृत डेटाबेस नहीं रखता है। इसके अलावा, मंत्रालय संस्कृत में रचित प्राचीन और मध्यकालीन बौद्ध ग्रंथों के अंग्रेजी भाषा के अनुवाद संबंधी कार्य नहीं करता है।

(ग) और (घ): केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान (सीआईएचटीएस), सारनाथ, जिसकी स्थापना तिब्बती स्रोतों में परिरक्षित प्राचीन भारतीय ज्ञान का जीर्णोद्धार करने और बौद्ध ग्रंथों का संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, तिब्बती और अन्य आधुनिक भाषाओं में अनुवाद करने के अधिदेश के साथ की गई थी, इस संस्थान ने 77 से अधिक भारत-बौद्ध संस्कृत कृतियों का जीर्णोद्धार किया है और समालोचनात्मक रूप से इन्हें संपादित किया है। संस्थान ने 340 से अधिक शैक्षिणक रचनाएं प्रकाशित की हैं, जिनमें धीः जर्नल के 60 से अधिक खंड शामिल हैं।

नव नालंदा महाविहार (एनएनएम), नालंदा मुख्य रूप से पाली भाषा और साहित्य के अध्ययन और प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित है, फिर भी इसने धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक सहित महत्वपूर्ण बौद्ध दार्शनिक कृतियों के अंग्रेजी अनुवादों के प्रकाशन में योगदान दिया है।

संस्कृत विश्वविद्यालयों का कामकाज संस्कृति मंत्रालय के दायरे में नहीं आता है।

*****